Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

समकालीन हिंदी कविता में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध

ज्योति गिरि
पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी
डॉ. हारीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर
ई-मेल- giriapara589@gmail.com

सारांश

हिंदी कविता के इतिहास में समकालीन कविता का कालखंड बहुत ही महत्वपूर्ण एवं समृद्ध है। सामाजिक संबंधों में व्याप्त तनाव एवं टकराव की अनुभूतियाँ इस दौर की कविता का केंद्रीय विषय है। समकालीन कविता जहां मानवीय जीवन की आपाधापी संघर्ष चेतना और परिवर्तित मूल्यबोध एवं स्त्री-पुरुष के नए मानमूल्यों से जुड़ी है वह निःसंदेह पूर्ववर्ती कविताओं से अलग है। जाति, वर्ग और जेंडर संबंधी जटिलताएं किसी न किसी रूप में सामाजिक परिवेश को प्रभावित करती हैं। कविता समय और सामाजिक सरोकारों की अनुभूति से निकलती है। समकालीन हिन्दी कविता स्त्री-पुरुष संबंधों की सामाजिक, राजनीतिक एवं निजी तथा सार्वजनिक परिस्थितियों को बहुत मुखरता से शामिल करती है। इसके कई पहलू हैं। जेंडर समानता भी इसका के पहलू है। समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री-पुरुष संबंधों को किस रूप में देखा समझा गया है, यह अध्ययन का विषय है। कविता समाज से और समाज कविता से कैसे जुड़ता है। खासतौर से इस संदर्भ में, इन्हीं संदर्भों का अध्ययन यहाँ किया गया है।

प्रस्तवना

प्राचीनता के बरक्स आधुनिकता बोध की उन्मुक्त धारा ने एक नई मनोसामाजिक बहस को जगह दी है। औपनिवेशिकता के अनुभवों के साथ-साथ विश्व-युद्धों और औद्योगीकरण के प्रभावी ढांचे का स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के मानव मूल्यों पर बखूबी असर पड़ा है। बदलते सामाजिक ताने-बाने में निजी, सार्वजनिक एवं पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन की भूमिकाएं भी बदली हैं।

जब-जब युगीन परिस्थितियों में बदलाव आता है तब-तब समय और समाज के साथ-साथ जीवन मूल्य और संवेदनाएं भी बदलने लगती हैं। समकालीनता न सिर्फ कविता की अंतर्वस्तु अपितु उसके शिल्प और रचनाशीलता को व्यापक

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

रूप से प्रभावित करती है। अपने समय, परिस्थितियों और मानवीय संबंधों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक माध्यम कविता भी है। । यदि सरल शब्दों में कहा जाये तो समकालीन कविता कवि के मानस-जगत में उद्भूत भाव और विचारों की इन्द्रियानुभूतिक बिम्बों में सफल अभिव्यक्ति है। समकालीनता के संदर्भ में नन्दकिशोर आचार्य का यह वक्तव्य समीचीन लगता है कि, एक इंसान के रूप मेरे लिए समकालीनता का अर्थ है अपने समय में एक मनुष्य की हैसियत से जिंदा रहने की आकांक्षा और उसके लिए किया गया संघर्ष। पाश्चात्य विचारक कालरिज ने भी समकालीन कविता को "श्रेष्ठतम शब्दों का श्रेष्ठतम क्रम" कहा है । समकालीन कविता किसको माना जाए इसको लेकर विद्वानों में मतभेद है कई रचनाकार इसे अस्सी के दशक का वाकया समझते हैं तो कई इसे साठोत्तरी कविता का नाम देते हैं तो कुछ इसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य से जोड़कर देखते हैं।

काल दर्शन के लिहाज से समकालीनता विचारणीय शब्द है। यह एक जटिल गुत्थी है कि, समय के सत्ता प्रवाह के किस हिस्से को काटकर समकालीनता के दायरे में रखा जाय और किसे बाहर। फिर भी समकालीन कविता के दौर को ठीक समझने के लिए उसे तीन हिस्सों में देखना बहुत जरूरी है । 1947 में देश की आजादी के बाद साहित्य और समाज पर जो सबसे गहरा प्रभाव दिखलाई पड़ता है वह है भारत का विभाजन ,साम्प्रदायिकता और नए भारत के निर्माण की चेतना। 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी में चारू मजुमदार और उनके साथियों द्वारा किया गया संघर्ष ,जिसका गहरा असर भारतीय गावं की संरचना, शहरी मध्यवर्ग का गावं से पूरी तरह पलायन एवं निम्न मध्यमवर्गीय सामाजिक तबकों द्वारा वर्चस्ववादी ताकतों के खिलाफ किया गया सतत प्रतिरोध। प्रतिरोध की इस पहल ने 1970 के बाद की भारतीय राजनीति, सामाजिक विकास की प्रक्रियाएं एवं निम्नवर्गीय सामाजिक तबकों के संस्कृतिकरण और उसकी सामाजिक चेतना तथा उनके बृहत्तर रूप का बड़े सामुदायिक समाजों का हिस्सा बन जाना। ये कुछ ऐसी गतिशीलताएं है जो समकालीन समय को गहराई के साथ प्रभावित करती हैं। 1990 में मंडल कमीशन और उसके बाद भारत में सत्ता प्रतिष्ठानों द्वारा शुरू की गयी आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण की प्रक्रियाएं भी इसी कड़ी का हिस्सा हैं। जाहिर है हम तभी समकालीन हैं, जब हम अपने समय में मनुष्य बने रहने का संघर्ष करते हैं और मनुष्य बने रहने का अर्थ है अपनी स्वाधीनता को, अपनी सर्जनात्मकता को, अपने मूल्यबोध को जीवित बचाए रखना।

समकालीन कविता सामयिक जिंदगी की हकीकत बयानी है। यदि समकालीन कविता की प्रवृत्ति की बात करें तो पारम्परिक सौन्दर्यबोध के साथ ही साम्प्रदायिकता, शोषित और वंचित समाज के सवाल, जनता के लोकतान्त्रिक

The Asian Thinker

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

हितों की आवाज अस्मितावादी संघर्ष, आर्थिक, उदारीकरण और भूमंडलीकरण के यथार्थ को इधर की कविता में देखा जा सकता है। पिछले बीस सालों में समकालीन कविता का मिज़ाज तेजी से बदला है । स्त्री, दलित, आदिवासी और अन्य हाशिए के समाज की उपस्थिति ने कविता की पारम्परिक दुनिया की प्रकृति को तोड़ा है और खुरदुरे सौन्दर्यबोध से जोड़ा है । मिसाल के तौर पर हम इस दौर के कवियों जैसे धूमिल, अरुण कमल , ज्ञानेन्द्रपति, केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, लीलाधर मंडलोई, अनामिका, चन्द्रकान्त देवताले, निर्मला पुतुल, कात्यायनी, आलोक धन्वा आदि को प्रमुखता से रेखांकित किया जाना मौजू है।

सांस्कृतिक बोध और समकालीनता की कविता

समकालीन कविता में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को लेकर में नया परिवर्तन दिखता है। नई पीढ़ी को संस्कृति का वही रूप स्वीकार है जो आज के समय में उपयुक्त है। समाजिक व्यवस्था में व्याप्त रूढ़ियों की जकड़न को ढीला करने की दिशा में समकालीन रचनाकारों ने सक्रिय प्रयास किया है। आधुनिक काल में स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संबंध धर्म और काम के पारंपरिक मूल्यों से हटकर आत्मनिर्भरता, स्वातंत्र्य और मुक्ति कामना और देह स्वतन्त्रता के पर्याय बने हैं। समकालीन हिंदी उक्त संदर्भों में कहाँ ठहरती है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध में यह देखने का प्रयास किया जाएगा। पद्मा सचदेवा कहती हैं "कविता के क्षेत्र में महिला लेखन पुरुष लेखन की अपेक्षा कम है । कहानी में जितनी स्त्रियाँ गतिशील है उतनी कविता में नहीं है । आज जबकि महिला समस्या को लेकर जगह जगह आन्दोलन किये जाते है ,महिला अधिकारों और महिला सशक्तिकरण की बात करते है तो यह परिवर्तन महिला रचनाकारों के लेखन में भी दिख रहा है। आज की नारी में आत्मसजगता का मजबूत पक्ष दिखता है और वह कई सवाल उठाती हैं। शोषित स्त्री के विविध रूपों का चित्रण करते हुए उसके जिंदा रहने की मजबूरी को दर्ज करती हुई सुनीता जोशी ने सृजन किया है-

" एक औरत जो सवाल-जबाब, स्वीकृत-अस्वीकृति की,

बहेयायी पर होंढ रखकर सीख लेती है गुलाबी होना,

X------X--------X--------X----------X

अक्सर अनिच्छा से हमारे तुम्हारे बीच जिंदा रहती है।"

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

आधुनिकता और विकास के समानान्तर महिलाओं की बाहरी दुनिया तक पहुँच और उनकी वैचारिक स्वतन्त्रता का विस्तार भले ही समय-समाज और बदलती दुनिया के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हो जाए लेकिन स्त्री-पुरुष की गैरबराबरी की सामाजिक परवरिश की वर्षों पुरानी परंपरा समकालीनता से कोसों दूर खड़ी दिखाई देती है। सवाल-जवाब, स्वीकृति-अस्वीकृति मानों महिलाओं के हिस्से का विषय ही नहीं। यहाँ दिखाई देता है।

प्रेम सम्बन्धों की अभिव्यक्ति

जहाँ प्रेम सम्बन्धों में प्रगाढ़ता, मिठास की गहराई और प्रेम की भावात्मकता का समावेश पूर्णता में होता आया है। आधुनिकता और बाजार तथा मानवीय संबंधों में आयी वस्तुनिष्ठता तमाम सारे मनोसामाजिक अनुभूतियों को कमजोर भी कर रही हैं। आज के समय में प्रेम की भावात्मक अनुभूतियों में कमी आई है, और इसे देह के दायरे तक समिति मनाने की प्रवृत्ति का विस्तार दिखाई पड़ने लगा है। भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताओं में प्रेम को बहुत सारगर्भित अर्थों में देखे जाने का उदाहरण मिलता है। प्रेम का मतलब महज देह और दैहिक सुख के इर्द-गिर्द नहीं।

"वे नहीं बने एक दुसरे के लिए

और रहते है आजीवन साथ "

यह कैसा विरोधाभास है, या यों कहे कि अपनी-अपनी जरूरतों के हिसाब से संबंधों की डोर खोली और बांधी जा रही है। यह प्रतिमान समकालीनता के आलोक में देखना बेहद जरूरी है। क्या बाजार का प्रभाव है? क्या आधुनिकता के आडंबर से निकली कोई चीज है? या कि इसके कोई अलग मायने हैं।

आज स्त्री पुरुष संबंधों की अंतरंगता के पीछे शाश्वत समाधानपरक दृष्टिकोण का अभाव दिखता है। देह के आकर्षण भर को प्रेम की अनुभूति कहा जा सकता है क्या? सवाल उठता है। चंद्रकान्त देवताले इसी प्रवृष्टि को प्रतिनिधित्व करते हुए घोडे क़ी टांगों के बीच छिपी औरत को गर्भवती पाते हैं-

"बंद खिडक़ियों के पार

घोड़े की टांगों के बीच

छिपी हुई औरत गर्भवती है।"

अलोक धन्वा की रचना "भागी हुई लड़की" –

"तुम जो / पत्नियों को अलग रखते हो /वेश्याओं से

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

और प्रेमिकाओं को अलग रखते हो/ पत्नियों से

कितना आतंकित होते हो /जब स्त्री बेखौफ भटकती है

ढूंढती हुई अपना व्यक्तित्व

एक ही साथ वेश्याओं और पत्नियों

और प्रेमिकाओं में..''

अस्तित्व का प्रश्न

स्त्री-कविता, स्त्री अस्मिता के रास्ते में आने वाले अनेक संकटों और स्त्री जीवन की भीतरी और बाहरी टकराहटों को दर्ज करती है। उनकी लिखी कविताएँ उनके निजी अनुभवों के ताप से निखरी हैं। ये कविताएँ अपने आप से और अपने समाज से संवाद का ज़रिया है।

"क्या तुम जानते हो पुरुष से भिन्न

एक स्त्री का एकांत

X X X

पता नहीं कितना अंधकार था मुझमें

मई सारी उम्र चमकने की कोशिश में

बीत गया"

"घर"व्यक्तिगत एवं सामाजिक संरचना

समय के अभाव के कारण रिश्तों की मजबूती कम हुई है |आज के समय में घर और उससे जुड़े रिश्ते मात्र कर्तव्य एवं दायित्व निर्वहन के दायरे में बंध गये हैं| काम,कुंठा ,संत्रास,भय के कारण आत्महत्याएं ,हत्याएं विवाहेत्तर सम्बन्ध जैसी घटनाएँ हो रही हैं| समय के साथ घर की संकल्पना में भी परिवर्तन आया है | समकालीन कविता इन बदलाओं पर अपनी नजर बनाए हुए दिखती है।

"जिनके रिश्ते टूट जाते है नदी से

X X X

वे अकेले पड़ जाते है |"

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

अनामिका का काव्य संग्रह 'खुरदरी हथेलियाँ'में वे लिखती हैं कि-

''कल एक बरतन पोंछने वाले जूने से छिदी हुई,

पानी की खायी

सुन्दर-सी खुरदरी हथेली

तपते हुए मेरे माथे पर /

ठंडी पट्टी-सी उतर आयी! मारे सुख के मैं

सिहर ही गयी!'' (अनामिका)

खुरदरापन सौन्दर्य के पारम्परिक शास्त्र का अतिक्रमण करता है। लेखिका खुरदुरापन, अनगढ़पन सौन्दर्य के साथ नवाचार का प्रयोग करती हैं। यह श्रम के कारण निर्मित हुआ है। श्रम का सौन्दर्यबोध स्त्री कविता में ही दिखाई पढ़ सकता है। जो अनामिका के यहाँ स्पष्ट है।

स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है ,जहाँ पहले स्त्रियाँ अपनी स्थिति और समस्याओं को मुखर रूप से नही कह पाती थी आज की स्त्री अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों को लेकर सवाल करती है | कात्यायनी की रचना *सहना, स्त्री का सोचना एकांत में .....* स्त्री की उपस्थिति को मनुष्यता की उपस्थिति से जोड़ती दिखती है। एक स्पष्टता भी दिखाई पड़ती है कि कहना नहीं बल्कि सहना बंद करना होगा। स्त्री के एकांत के स्पंदन को सुनना असल मायने में कविता का कर्म है। स्त्री को एकांत की जरूरत ही मनुष्यता पर सवाल उठाती है।

नए समाज-विधान की रचना करते हुए

पहाड़ों से,समुद्र की ऊँची लहरों से टकराकर

आजादी !

ऐसे कई कई स्त्री-पुरुष समबन्धों में आए परिवर्तन और उसके समय-संदर्भों को दर्शाते हैं। आखिर क्या कारण है कि स्त्री –पुरुष सम्बन्धों में मूल्यपरक तब्दीली आई है। मोटे तौर पर इसके दो संदर्भ दिखाई पड़ते हैं। पहला महिलाओं की सार्वजनिक दुनिया में हिस्सेदारी का बढ़ने के साथ निर्णय और सवाल करने की हिम्मत और दूसरा बाजार का प्रभाव, स्ट्रेस, पितृसत्ता का व्यवस्था के साथ गठजोड़। क्या यह वर्चस्व, अस्मिता .अस्तित्व का प्रश्न है या अहम का अधिकार का? जिनके कारणों को ज्ञात किया जाना आवश्यक है। स्त्री-पुरुष संबंध कहीं से भी वर्चस्व की संस्कृति बनाम अस्तित्व

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

का संघर्ष नहीं अपितु सघनता से आगे बढ़ने की बराबर अभ्यास है। बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक वातावरण का प्रभाव स्त्री-पुरुष संबंधों पर ही नहीं बल्कि वृहत्तर समाज पर पड़ा है। लेकिन यह संबंध पूरी मानवता के विकास और सहअस्तित्व के लोकतांत्रिकरण से जुड़ा है। कविता इन संदर्भों और अनुभव जगत को हमारे समक्ष रखकर इस पर विचार करने का आह्वान करती दिखती है।

कविता का लोकवृत्त

कविता का लोक और लोक की कविता का जो समाजशास्त्र बनाता है वह देशज बोलियों, शब्दों और मान्यताओं आदि के संदर्भों सी जुड़कर बनता है। भागी हुई लड़कियां, लकड़बग्घा हंस रहा है, खुरदरी हथेलियाँ कविता के जरिये उस लोक को प्रतिबिम्बित करती है जिसमें स्त्री-पुरुष सहित विभिन्न बाइनरी तैयार होती है। खासतौर से 80 और 90 के दशक जब पूरी दुनिया एक नए बदलाव से गुजरती है, उदारीकरण, वैश्वीकरण का प्रभाव सिर्फ आर्थिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को प्रभावित नहीं करती बल्कि सामाजिक-सामुदायिक संबंधों को भी प्रभावित करती है। भाव और संवेदना की जगह भौतिक आकर्षण सहित अन्य वस्तुस्थितियाँ बदलती हैं। समकालीन कविता में उन्हीं बदलाओं को प्रभाव दिखाई पड़ता है। एक ओर महिला अधिकारों, स्त्री संघर्ष तथा पारिवारिक-सामाजिक भूमिकाओं के बीच खुद को सम्हालती स्त्री दिखती है तो दूसरी तरफ समानांतर स्त्री का प्रतिरोधी स्वर भी कविताओं के जरिये सुनाई पड़ता है। नए प्रतिमानों के साथ कविता के तेवर में बदलाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

समकालीन कविता की मानोसामाजिक परिधि में स्त्री जीवन की चुनौतियाँ जिस नए संदर्भ में दिखाई पड़ती है। उसके बरक्स उस स्त्री की भी झलक दिखाई पड़ती है जो तमाम झंझावातों से ऊपर निकलते हुए सार्वजनिक दुनिया में अपनी जगह बनाती दिखती है।

एकांत को छूती है स्त्री /संवाद करती है उससे

जीती है, / पीती है उसको चुपचाप /वह रचती है जीवन (कात्यायनी)

एकांत को जीती स्त्री एक नया जीवन भी रचती है। जीवन की यह रचना उसके निजी और सार्वजनिक जीवन बोध का विस्तार और उसमें सशक्त दखल को दर्शाती है। यह स्त्री अस्मिता की सार्वभौमिकता का निहितार्थ है। जो एकांत से आगे बढ़कर नई संभावनाओं के विस्तार की रचना करती दिखाई देती है।

निष्कर्ष

Year-3 Volume: IV, October-December, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

कविता समय से साक्षात्कार कराती है। नए समाज के बनाने और और अतीत की परिपाटी को एक साथ यहाँ देखा जा सकता है। समकालीन कविता में स्त्री-पुरुष संबंधों के बदलते प्रतिमान का अध्ययन करते हुए दिखाई पड़ता है कि समाज और सामाजिक कार्य व्यवहार पर अधुनातन परिस्थितियों तथा परिवेश का प्रभाव विघटन और विचलन को पैदा कर रहा है। परिवार व्यवस्था की संकल्पना कई स्तरों पर कमजोर होती दिखाई पड़ती है। प्रेम, सद्भाव, संवेदना जैसे मूल्य भौतिकता से निकटता स्थापित करने को आकर्षित हो रहे हैं। यह जेंडर असमानता और असंवेदनशीलता की ओर भी इंगित करती है। आधुनिक होते समाज को मूल्यगामी सोच के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। प्रगतिशीलता का मतलब तभी है जबकि हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें। संबंधों में संवेदना का स्थान निहायत जरूरी जान पड़ता है। जो कम होता नजर आ रहा है। समकालीन कविता के आलोक में देखें तो ऐसे कई पहलू हमारे सामने स्पष्टता से प्रतिबिम्बित होते हैं। जरूरत है प्रगति के साथ मूल्यगामी संवेदना की।

The Asian Thinker

संदर्भ-

- अनामिका.(2004). *खुरदुरी हथेलियाँ*.नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.

- देवताले, चन्द्रकांत.(1980). *लकड़बग्घा हंस रहा है*. हापुड़: सम्भावना प्रकाशन.
- पुतुल, निर्मला.(2004). *नगाड़े की तरह बजते शब्द*. नई दिल्ली:भारतीय ज्ञानपीठ
- धन्वा, अलोक.(1998).*दुनिया रोज बनती है*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन
- कमल, अरुण.(1989). *सबूत*.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन
- कात्यायनी.(1994).*सात भाइयों के बीच चम्पा*.पंचकूला: आधार प्रकाशन.
- मंडलोई, लीलाधर.(2010). *एक बहुत कोमल तान*.गाजियाबाद: अंतिका प्रकाशन.
- ज्ञानेन्द्रपति.(2007). *कवि ने कहा*. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन.
- दुबे, डॉ गीता.(2016). समकालीन कविता में स्त्री चिंतन. मुंबई:महाराष्ट्र
- पाण्डेय, मनोज. (2017). समकालीन साहित्य वैचारिक चुनौतियाँ. दिल्ली: ए. आर. पब्लिशिंग कम्पनी
- समकालीन भारतीय साहित्य, परिसंवाद ,भारतीय साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियाँ(मई- जून2011)
- आजकल (11), (संपादक –फरहत परवीन),नई दिल्ली ,2014
- देशज(09), (संपादक-अरुण शीतांश),आरा ,2014
- आजकल (11),(संपादक –फरहत परवीन),नई दिल्ली ,2015
- समयांतर (04),(संपादक-पंकज बिष्ट),दिल्ली ,2016
- समयांतर (09),(संपादक—पंकज बिष्ट),दिल्ली, 2013
- उद्भव (05).(संपादक-उमेश चंद्रा),लखनऊ ,2011

The Asian Thinker